# वैश्विक स्तर पर हिन्दी साहित्य

**डॉ. संजीत**
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ए.आई.जाटएच.एम. महाविद्यालय, रोहतक हरियाणा

**प्रस्तावना**

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पूरे विश्व लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। इसी प्रक्रिया में दुनिया के सभी देश एक दूसरे से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक रूप से अंतसम्बद्ध होते हैं। वैश्वीकरण के कारण ही हिन्दी साहित्य पहले भी और आज भी निरन्तर अपने चर्मात्कर्ष पर अपना परचम लहराता हुआ दिखाई दे रहा है। क्योंकि हिन्दी साहित्य एक अनोखा साहित्य है। जिसे किसी शब्द, अर्थ, परिभाषा में बांधना सम्भव नहीं है, हिन्दी साहित्य की परम्परा लगभग बारह सौ वर्ष पहले शुरू होकर आज विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अपना स्थान निश्चित कर चुकी है। परन्तु आज संदर्भ में देखे तो हम वैश्विक ग्राम की संज्ञा में जी रहे हैं जहाँ मनुष्य अनेक सोशल साइट्स और संचार-माध्यमों से सम्पूर्ण विश्व से जुड़ गया है। इन्हीं सोशल साइट्स के माध्यम से विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन कर अपने वक्तव्यों व विचारों को सुनकर स्वयं को लाभान्वित कर रहे हैं। यही कारण है कि आज वैश्विक पटल पर हर व्यक्ति हमारे साहित्यकारों को सुनना चाहते हैं। जो वैश्विक स्तर पर हिन्दी साहित्य को पहचान दिलाने में मूल आधार बनेगी। आज के कठिन समय में भारत ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता और हिन्दी साहित्य के पाठक वर्ग को बरकरार रखने का कार्य केवल सोशल मीडिया या साइट्स का नहीं बल्कि इसके पीछे हिन्दी साहित्य के अनेक साहित्यकारों, पत्रकारों, पत्रिका ओर प्रचार-प्रसार वर्ग तो है ही इसके साथ-साथ संस्थागत प्रयासों और कार्यक्रमों का योगदान भी रहा है।

आज हिन्दी साहित्य ने वैश्विक परिदृश्य पर अपनी प्रतिभा किस प्रकार स्थापित की इसके लिए गत काल में एक बार मुड़कर देखना होगा। जैसा कि हम जानते हैं आधुनिक काल को परिवर्तनों का काल कहा गया और यह परिवर्तन यूरोप की औद्योगिक क्रांति से शुरू होकर सम्पूर्ण विश्व में फैल गया। जिसके कारण न सिर्फ साम्राज्यवाद का ही जन्म हुआ बल्कि पूरे विश्व में लोगों को विस्थापन भी होना प्रारम्भ हो गया। जिसके कारण न सिर्फ साम्राज्यवाद का ही जन्म हुआ बल्कि पूरे विश्व में लोगों को विस्थापन भी होना प्रारम्भ हो गया जिसके कारण भारतीय मूल समाज के लोगों ने वैश्विक पटल पर अपनी एक पहचान बनाई और इसी वजह से भारत की मूल संस्कृति और साहित्य से लोग परिचित हो रहे हैं। भारतीय वंश के अनेक ऐसे साहित्यकार हैं जो भारतीय साहित्य सृजन कर उसे वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करते हुए हिन्दी साहित्य के लिए पाठकों का नया वर्ग तैयार कर रहे हैं। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य के कुछ विशेष लेखक गण है जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन हिन्दी साहित्य को वैश्विक स्तर एक नए रूप में स्थापित करने में लगा दिया।

वैश्विक स्तर पर उषा प्रियवंदा ऐसी रचनाकार है जिन्होंने अमेरिका में रहते हुए हिन्दी साहित्य को वहां की जनता के सम्मुख रखा। उपषा प्रियवंदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य में एम एम तथा पीएचडी की उपाधि ली। उन्होंने लेडी श्रीराम कॉलेज इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य पूर्ण कर फुलब्राइट स्कालाशिप लेकर वे अमेरिका चली गई पर उन्होंने विस्कासिन विश्वविद्यालय मैडिसन में दक्षिण एशियाई विभाग में सहायक प्रोफेसर पद पर अपना कार्य प्रारम्भ किया। उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के भारतीय शहरी, पारिवारिक सांस्कृतिक परिवेश का संवेदनशील एवं प्रभावी कथानक में अपनी एक विशेष पहचान बनाई। इनके उपन्यास अन्तर्वशी व रूकोगी नहीं याचिका'' मे उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन शैली का वर्णन व विश्लेषण किया है जो बेहतर अवसर की तलाश में प्रवासी हो जाते हैं और वहाँ अपनी लाचारियों के बीच कशमकश में जीवन जीते हैं।

पंजाब में जन्मी डॉ. सुधा ओम ढींगरा'' जी ने 1982 से अमेरिका में लेखन के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। वे कनाडा की पत्रिका ''हिन्दी चेतना'' में सम्पादक के रूप में कार्य किया।

ISBN: 978-81-954645-0-0

अमेरिका कनाडा भारत के साथ मॉरीशस में हिन्दी साहित्य की एक अपनी परम्परा रही है। यहाँ पर कथा-साहित्य में शेष पहचान रखने वाले अभिमन्यु अनत का जिक्र करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

अभिमन्यु अनत के साहित्य में विद्रोह का स्वर और शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ बेबाक अभिव्यक्ति है। हिन्दी के अध्यापक एवं नाट्य प्रशिक्षण से जुड़े रहे अभिमन्यु अनत ने अपने विभिन्न हिन्दी उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से मॉरीशस को समकालीन हिंदी साहित्य द्वारा परिचित करवाया। उनके ''लाल पसीना'' उपन्यास में भारत से मारीशस आए गिरामिटिया मजूदरों की मार्मिक कहानी है और इसे फ्रेंच में अनुवाद किया गया। भारत से बाहर हिंदी में उपन्यास प्रयी लिखने वाले अबतक के एकमात्र उपन्यासकार है। भारतीय मूल की अमेरिकी उपन्यासकार, अभिनेत्री एवं शिक्षाविद्, सुषम वेदी ने उपन्यासों, कहानी, निबन्ध सहित कई विधाओं में महत्त्वपूण लेखन कार्य किया। हिंदी साहित्य में इनके योगदान हुए जनवरी 2006 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इन्होंने हिंदी भाषा को लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ''हिन्दी भाषा शिक्षण कार्यक्रम'' (हिन्दी लैंग्वेज पेडागेजी) एक उल्लेखनीय कार्यक्रम चलाया।

इसी प्रकार तेजेन्द्र शर्मा ब्रिटेन के ऐसे कहानीकार है। जिनके संकलन नेपाली, पंजाबी, उर्दू आदि भाषाओं में अनूदित हुए हैं। नाटक फिल्म एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियां जुड़े रहने वाले तेजेन्द्र शर्मा हिन्दी में अपनी सक्रियता के पीछे अपनी दिवंगत पत्नी इंदु शर्मा की प्रेरणा बतलाते हैं। इनकी कहानियों में मानवीय रिश्तों में मौजूद करूणा और संघर्ष के कई अंतर्द्वंद देखने को मिलते हैं।

ब्रिटेन की हिन्दी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' की सह-संपादिका तथा हिंदी समिति यू.के. की उपाध्यक्ष रही उषा राजे की सक्रियता निश्चय ही सराहनीय है।

पूर्णिमा वर्मन के सम्पादन में निकल रही हिंदी इनटरनेट पत्रिकाएं अभिव्यक्ति तथा अनुभुति की सामग्री को खूब सराहना और लोकप्रियता मिली। इनके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य को वैश्विक पटल पर हिन्दी साहित्य को प्रस्थापित करने वाले साहित्यकारों में सुनीता जैन, सोमावीरा शालीग्राम शुक्ल, रेखा रस्तोगी, स्वदेश राणा, नरेन्द्र कुमार सिन्हा, आर्य भूषण, वेद प्रकाश सिंह, अरूणा, स्वदेशी राणा आदि नाम उल्लेखनीय है।

अत: हिन्दी साहित्य को वैश्विक स्तर पर उभारने के लिए केवल व्यक्तिगत ही नहीं संस्थागत स्तर पर कई कार्य किए जा रहे। जिनसे हिन्दी साहित्य नित प्रतिदिन नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ता हुआ अपना हिन्दी परचम लहराने लगा है।

ISBN: 978-81-954645-0-0